NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

आरती

धनासरी महला १ आरती

ੴ सतगुर प्रसादि।।

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥

कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥

रहाउ ॥

सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥

गुर साखी जोति परगटु होइ ॥
जो तसि भावै सु आरती होइ ॥३॥

हरि चिरण कमल मकरंद लोभति मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥
कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥४॥१॥७॥१६॥

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

नाम तेरो आसनो नामु तेरो ऊ ऊरसा नाम तेरा केसरो ले छटिकारे ॥
नामु तेरा अम्भुला नामु तेरो चम्दनो घसि जिपे नामु ले तुझहि कऊ चारे ॥१॥

नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पिसारे ॥
नाम तेरे की जोति लिगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥२॥

नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे
॥३॥

दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥
कहे रवदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे
॥४॥३॥

श्री सेणु ॥

धूप दीप घृत साजि आरती ॥
वारने जाउ कमला पती ॥१॥
मंगला हरि मंगला ॥
नति मंगल राजा राम राइ को ॥ १ ॥

रहाउ ॥

उतमु दीअरा नरिमल बाती ॥
तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥२॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

रामा भगति रामानंदु जाने ||

पूरन परमानंदु बखानै ॥३॥

मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥

सैनु भणै भजु परमानंदे ॥४॥२॥

प्रभाती कबीर जीउ ॥

सुन संधिआ तेरी देव देवाकर अधपति आदि समाई ॥

सिध समाधि अंतु नही पाइआ लागि रहे सरनाई ॥१॥

लेहु आरती हो पुरख निरंजन सतिगुर पूजहु भाई ॥

ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै अलखु न लखिआ जाई ॥१॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

रहाउ ||

ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥

जोति लाइ जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥२॥

पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी ॥

कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥३॥५॥

धंना ||

गोपाल तेरा आरता ॥

जो जन तुमरी भगतकिरम्ते तनि के काज सवारता ॥१॥

रहाउ ॥

दालसीधा मागउ घीउ । हमरा खुसी करै नति जीउ ॥

पनऊीआ छादनु * नीका ॥ अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥

गउ भैस मगउ लावेरी ॥

इक ताजनतिुरी चंगेरी ॥

घर की गीहनचिंगी ॥

जनु धंना लेवै मंगी ॥२॥४॥

पाइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोउ आँख तरे नही आनयो॥

राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहै मन एक न मानयो॥

समृितसासत्र बेद सभै बहु भेद कहै हम एक न जानयो॥

श्री असपिान कृपा तुमरी करमै न कहयो सभ तोहबिखानयो

॥ ८६३ ॥

दोहरा

सगल दुआर कउ छाडि कै गहयो तुहारो दुआर ।।

बाह गिहे की लाज असि गोबदि दास तुहार॥८६४॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com